

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 4, परिचय, भाग 4, प्रायश्चित के सिद्धांत का इतिहास

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 4, परिचय, भाग 4, प्रायश्चित के सिद्धांत का इतिहास है।

हम प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास का अपना अध्ययन जारी रख रहे हैं।

अब हम निस्सा के ग्रेगरी की ओर बढ़ते हैं। जैसा कि मैंने कहा, पश्चिम में प्रमुख उद्देश्य शैतान को फिरौती देना था। निस्सा के ग्रेगरी ने कई अच्छे काम किए।

यह उनमें से एक नहीं है। हालाँकि, वह एक पूर्वी पिता है, जो अपने महान धर्मशिक्षा में मछली के हुक के साथ मोचन के अपने कुख्यात सादृश्य के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता है। ग्रेगरी लिखते हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमारी ओर से फिरौती को आसानी से वह व्यक्ति स्वीकार कर सकता है जिसने इसकी मांग की थी, मसीह के देवता को हमारी प्रकृति, यानी यीशु की मानवता के पर्दे के नीचे छिपा दिया गया था, ताकि, भूखी मछली की तरह, देवता का हुक मांस के चारे के साथ निगल लिया जा सके, और इस तरह प्रकाश गायब हो सकता है।

ईश्वर का उद्देश्य था कि मसीह को हमारे स्वभाव में समाहित किया जाए ताकि हमारा स्वभाव स्वयं दिव्य बन जाए, क्योंकि यह मृत्यु से बचा हुआ था। ग्रेगरी का प्रारंभिक बिंदु यह था कि भ्रष्ट मानवजाति को एक चिकित्सक की आवश्यकता थी। ग्रेगरी ने मानवजाति को कानूनी रूप से खरीदा हुआ, एक गुलाम के रूप में माना।

इस आधार पर, ग्रेगरी ने संदिग्ध रूप से यह निष्कर्ष निकाला कि मसीह द्वारा शैतान को फिरौती की कीमत चुकाई जानी चाहिए, जबकि शैतान मसीह की दिव्य शक्ति की तलाश कर रहा था। शैतान ने मानवजाति को धोखा दिया था, इसलिए भगवान ने शैतान को धोखा दिया। लेकिन शास्त्र यह नहीं दर्शाता है, कभी नहीं कहता है, कि फिरौती किसी को भी दी जाती है, यहाँ तक कि भगवान को भी नहीं।

कोई कह सकता है कि ऐसा ही है, लेकिन मैं इसे इस तरह से कहूंगा: शास्त्र ऐसा नहीं कहता, लेकिन हम ऐसा कहते हैं। निश्चित रूप से, यह शैतान को नहीं दिया गया था। छुड़ौती मसीह के लहू द्वारा दासता से मुक्त होकर मसीह में नई सृष्टि और जीवन की ओर ले जाती है।

मुझे वास्तव में इसमें कुछ अच्छाई नज़र आती है। इसमें स्पष्ट रूप से बुराई भी है, और मैं एक पूर्वी पिता का उपयोग करके पश्चिमी मूल भाव को प्रस्तुत कर रहा हूँ क्योंकि यह था। यह ग्रेगरी ऑफ़ निस्सा में बिल्कुल स्पष्ट है, हालाँकि वह इस धोखे के विचार के साथ सीमाओं से बहुत आगे निकल गया। इसमें क्या अच्छा है? मसीह की मृत्यु एक छुड़ौती है।

मार्क 10:45, प्रसिद्ध छुड़ौती कथन कि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने नहीं आया, बल्कि सेवा करने और बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देने आया। इसी तरह पौलुस ने पादरी के रूप में मसीह को अपने जीवन को छुड़ौती के रूप में देने के रूप में संदर्भित किया। तो यह सही है।

शैतान को कैसे दिए गए? नहीं। जानबूझ कर शैतान को धोखा दिया गया? नहीं। क्या शैतान को धोखा दिया गया? ज़रूर, अपने अंधेपन और पाप के कारण, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं हो रहा है।

ग्रेगरी और शैतान को फिरौती देने की पश्चिमी परंपरा सही है कि क्रॉस को शैतान की ओर निर्देशित माना जाता है। उसे भुगतान करने के लिए नहीं, ठीक है, लेकिन जॉन 12:31 में शास्त्र, जॉन 12:31 में यीशु ने कहा, यह जॉन में प्रायश्चित की तस्वीरों पर चर्चा करने वाला मुख्य अध्याय है, अब इस दुनिया का न्याय है। अब इस दुनिया के शासक को बाहर निकाल दिया जाएगा, और मैं, जब मैं पृथ्वी से ऊपर उठा लिया जाऊंगा, तो सभी लोगों को अपने पास खींच लूंगा।

उसने यह दिखाने के लिए कहा कि वह किस तरह की मौत मरने जा रहा था। इस दुनिया का शासक शैतान है, बेशक, परमेश्वर के अधीन, लेकिन यीशु की मृत्यु में, उसे बाहर निकाल दिया जाएगा। इसलिए क्रूस शैतान और राक्षसों की ओर निर्देशित है, लेकिन एक फिरौती या उनके लिए कुछ बकाया के रूप में नहीं, बल्कि उनके विनाश के रूप में, उनके प्रति एक न्याय के रूप में।

कुलुस्सियों 2:15, जैसा कि हम बाद में अध्ययन करेंगे, परमेश्वर ने प्रधानता और शक्तियों का मज़ाक उड़ाया, उन पर सार्वजनिक प्रदर्शन किया, और इब्रानियों 2:14, चूँकि बच्चे मांस और लहू में सहभागी थे, इसलिए मसीह भी उन्हीं चीज़ों में सहभागी हुआ, ताकि मृत्यु के द्वारा वह उसे नाश कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, अर्थात् शैतान। तो निश्चित रूप से, हम ग्रेगरी की विचित्र तस्वीर को अस्वीकार करते हैं, आप जानते हैं, ईश्वर द्वारा शैतान को यीशु की मानवता के साथ लुभाने की विचित्र तस्वीर, जैसे कोई मछली पकड़ने की कोशिश करता है और मसीह के देवता के सुनहरे हुक के नीचे, शैतान उसमें फँस जाता है और ईश्वर उसे अंदर खींच लेता है, यह अपमानजनक है। और शैतान को फिरौती देना भी सटीक या स्पष्ट नहीं है, हालाँकि इसके कुछ हिस्से बाइबिल के विषयों को छूते हैं।

ओरिजन ने 185 से 254 के बीच कई विषयों पर शिक्षा दी, जिनमें यह भी शामिल है। प्रायश्चित एक जीत है, खास तौर पर बुरी शक्तियों पर। ओरिजन ने लिखा, मसीह, शाश्वत शब्द और बुद्धि, एक बुद्धिमान और परिपूर्ण व्यक्ति के रूप में पीड़ित हुए, चाहे उन्हें जो भी भुगतना पड़े, उन्होंने मानव जाति की भलाई के लिए सब कुछ किया।

एक व्यक्ति का धर्मपरायणता के लिए मरना, उस दुष्ट आत्मा, शैतान की शक्ति को उखाड़ फेंकना, जिसने पूरी दुनिया पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था, इसमें कुछ भी बेतुका नहीं है। यह पिताओं में एक सामान्य विषय है, और यह हमें शैतान को फिरौती देने को समझने में मदद करता है। शैतान ने पतन में प्रभुत्व प्राप्त किया था।

आप जानते हैं, उसने हमारे पहले माता-पिता को मूर्ख बनाया, उसने उन्हें धोखा दिया, और उनके पाप में, फिर वे चीजों की इस गलत समझ में उसके प्रति ऋणी हो गए। यदि पश्चिम में मुख्य रूप से शैतान के लिए फिरौती का विचार था और इसके साथ चलने वाला विचित्र धोखा नहीं था, तो पूर्व में मुख्य रूप से देवत्व की धारणा थी। अथानासियस एक पूर्वी पिता थे जिनके पास कई विषय थे, जिनमें से एक देवत्व था।

एथनासियस ने लगभग 296 से 373 के बीच शब्द के अवतार पर लिखा, जो एक धार्मिक क्लासिक है। जब वह लगभग 20 वर्ष का था, तो मेरा कहना था कि भगवान उपहार देते हैं। वाह।

इस पुस्तक का एक प्रमुख विषय बुराई पर मसीह की जीत और विजय है, क्राइस्टस विजेता विषय। उन्होंने पतन के उत्पत्ति विवरण का अनुसरण किया, और निष्कर्ष निकाला कि इसके परिणामस्वरूप, हमें न केवल मरना था, बल्कि मृत्यु और भ्रष्टाचार की स्थिति में रहना था। यह विशिष्ट रूप से पूर्वी है।

पश्चिमी परंपरा संत ऑगस्टीन का अनुसरण करती है, जिन्होंने कहा था कि हम दोषी हैं। यह कानूनी भाषा थी। वास्तव में, टर्टुलियन ने यहां आकर संत ऑगस्टीन और बाद में एंसेलम के लिए कुछ शब्दावली का योगदान दिया।

लेकिन पश्चिम में, पतन, पाप और निंदा की निंदा पर जोर दिया गया था। पूर्व में, यह भ्रष्टाचार और मृत्यु पर था, और देवत्व उस पर विजय प्राप्त करता है, आप देखिए। मसीह के देवत्व के महान रक्षक अथानासियस को फिर से उद्धृत करते हुए, जिन्हें मसीह के देवत्व को धारण करने के लिए पाँच बार निर्वासित किया गया था।

उन्होंने बाइबल से अलग-अलग तर्क दिए, कुछ बेहतर, कुछ बदतर। लेकिन उनका सबसे शक्तिशाली तर्क उद्धार संबंधी तर्क था। वचन के अनुसार, बेटे को हमें बचाने के लिए, उसे परमेश्वर होना चाहिए।

केवल ईश्वर ही हमें बचा सकता है। यदि वह ईश्वर नहीं है, तो हम बच नहीं सकते। उन्होंने यह समझा कि भ्रष्टाचार को मृत्यु के अलावा किसी और माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता।

मृत्यु को एक भेंट और बलिदान के रूप में समर्पित करके, हर दाग से मुक्त होकर, उसने अपने मानव भाइयों के लिए मृत्यु को समाप्त कर दिया। पूर्वी परंपरा, जिसका अथानासियस एक अद्भुत प्रतिनिधि है, अगर पश्चिम ने क्रॉस पर जोर दिया, तो सही है? फिर से, ऑगस्टीन से। वह अवतार में विश्वास करता था।

वह पुनरुत्थान में विश्वास करते थे। पूर्व में क्रूस पर चढ़ने में विश्वास था। लेकिन पश्चिम ने निश्चित रूप से क्रूस, पीड़ाओं, जिसे कभी-कभी यथार्थवादी विचार कहा जाता है, मसीह की भयानक पीड़ाओं पर जोर दिया।

पूर्व ने अवतार और पुनरुत्थान पर जोर दिया। अथानासियस ने कहा कि पुनरुत्थान, मृत्यु के विनाश और क्रूस द्वारा उस पर विजय का एक बहुत मजबूत सबूत है। अथानासियस ने ईश्वर की कृपा और दयालुता और मसीह के प्रतिस्थापन बलिदान पर भी पूरा जोर दिया।

एक यादगार वाक्य में, यह प्रसिद्ध हो गया है। पूर्वी रूढ़िवादी चर्च में देवत्व को समझाने के लिए नियमित रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले अथानासियस ने लिखा कि उन्होंने वास्तव में, शब्द ने मानवता को ग्रहण किया ताकि हम ईश्वर बन सकें। और उन्होंने खुद को एक शरीर के रूप में प्रकट किया ताकि हम अदृश्य पिता का विचार प्राप्त कर सकें।

क्या वह यह कह रहा है कि हम ईश्वर के हो जाते हैं? नहीं। वह कह रहा है कि हम ईश्वर की प्रकृति में भाग लेते हैं, ईश्वर के अदृश्य सार में नहीं, बल्कि जिसे पूर्व में ईश्वर की ऊर्जा कहा जाता है, उसमें। यानी, समय और स्थान में प्रकट होने वाले उसके गुण।

2 पतरस 1:4 पूरे पूर्वी रूढ़िवादी परंपरा के लिए एक प्रमाण पाठ था, और यह आज भी ऐसा ही है। परमेश्वर की दिव्य शक्ति ने हमें जीवन और ईश्वरीयता से संबंधित सभी चीजें उसके ज्ञान के माध्यम से दी हैं जिसने हमें अपनी महिमा और श्रेष्ठता के लिए बुलाया है, जिसके द्वारा उसने हमें अपने बहुमूल्य और बहुत बड़े वादे दिए हैं, ताकि उनके माध्यम से आप ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार बन सकें, पापी अभिलाषा के कारण दुनिया में व्याप्त भ्रष्टाचार से बच सकें। यहाँ, आप फिर से भ्रष्टाचार देखते हैं, और यहाँ, आप उन्हीं शब्दों को देखते हैं, एक ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार।

मुझे लगता है कि इस संदर्भ में टॉम श्राइनर सही हैं, मैं पेट्रिन एपिस्टल्स पर श्राइनर की टिप्पणी का जिक्र कर रहा हूँ, कि यह रहस्यों और संस्कारों में भागीदारी के रूप में पूर्वी अर्थ में भागीदारी के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि एक ईश्वर अपने गुणों को एक प्राणी के रूप में अपने लोगों में बना रहा है क्योंकि वे उसके वचन के आगे झुकते हैं और उसकी आत्मा पर भरोसा करते हैं। एन सेलमैन एबेलार्ड एन सेलमैन एबेलार्ड ने क्रमशः प्रायश्चित के वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण, एन सेलमैन और व्यक्तिपरक नैतिक प्रभाव सिद्धांत पर जोर दिया। वस्तुनिष्ठ संतुष्टि दृष्टिकोण, व्यक्तिपरक नैतिक प्रभाव दृष्टिकोण।

प्रायश्चित के वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से हमारा क्या मतलब है? प्रायश्चित के वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण बताते हैं कि मसीह ने हमारे लिए हमारे बाहर क्या किया, ठीक है? प्रायश्चित के व्यक्तिपरक दृष्टिकोण इस बात पर जोर देते हैं कि मसीह ने हमारे भीतर क्या किया, उनके क्रूस ने हमें अंदर से प्रेरित करने के लिए क्या किया। अब, मामले की सच्चाई क्या है? मामले की सच्चाई यह है कि वे दोनों सत्य हैं, लेकिन क्रूस को मुख्य रूप से या पूरी तरह से इस तरह से आंतरिक बनाना, व्यक्तिपरक, बहुत कमजोर है, और हम इसे बार-बार देखेंगे। यह इसकी जड़ प्रतीत होती है। एबेलार्ड इसकी जड़ें बताते हैं, और वह एन सेलमैन के बारे में जानते थे और उन्होंने जो किया उसे अस्वीकार कर दिया।

यह जटिल हो जाता है, इसलिए मैं एक बार में एक-एक करके इसका विश्लेषण करूँगा। एन सेलमैन ने वस्तुनिष्ठ संतुष्टि दृष्टिकोण सिखाया, और एबेलार्ड ने व्यक्तिपरक नैतिक प्रभाव दृष्टिकोण सिखाया। एन सेलमैन ने देखा कि प्रायश्चित का क्राइस्टोलॉजी से कितना स्पष्ट संबंध था।

यह एक अद्भुत बात है। मसीह का व्यक्तित्व और कार्य एक साथ चलते हैं। केवल मसीह, जो मनुष्य और परमेश्वर दोनों हैं, दुनिया के पापों का प्रायश्चित कर सकते हैं।

एन सेलमैन को इसलिए खारिज करना गलत होगा क्योंकि उन्होंने भी अपने समय की सामंती छवि को अपनाया था। थिसलटन हमें याद दिलाते हैं कि हर धर्मशास्त्री को अपने समय के पाठकों के लिए व्याख्यात्मक पुलों पर विचार करना चाहिए। एन सेलमैन एक आर्चबिशप बन गईं।

उन्होंने भिक्षुओं को प्रशिक्षित किया। वे एक शिक्षक थे, और अपनी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक, क्यूर देउस होमो, व्हाई गॉड बिकेम ए मैन में उन्होंने द्वंद्वात्मक पद्धति का इस्तेमाल किया। उस शब्द का धर्मशास्त्र से अलग अर्थ है।

इस संबंध में, इसमें उसे प्रश्न पूछना और अपने शिष्यों से उत्तर प्राप्त करना शामिल है। अब, बहस एन सेलमैन और बोजो, प्रतिनिधि शिष्य के बीच घूमती है, जो उनके बीच हुई वास्तविक चर्चाओं को दर्शा सकती है; फिर से, नाम शिष्य का काल्पनिक हो सकता है, लेकिन मठ में। यह भटकती है, और यह अजीब है क्योंकि बोजो कहेगा, ओह मास्टर, अब मुझे प्रकाश दिखाई दे रहा है, इस तरह की बातें।

यह इस तरह से थोड़ा अजीब हो जाता है। यह बहुत ज़्यादा है, लेकिन यह अच्छा है, और कई बार, वे गलत रास्ते पर चले जाते हैं, गलत रास्ता अपना लेते हैं, और एन सेलमैन छात्र को वापस ले आती हैं, लेकिन आप जानते हैं, मुझे एक दोषी ऐतिहासिक धर्मशास्त्री कहें। यह दिलचस्प चीज़ है, और यह टिकी हुई है।

एन सेलमैन की इन सभी सामंती बातों के लिए कड़ी आलोचना की गई, जिससे संतुष्टि मिलती है, क्योंकि इसकी उत्पत्ति सामंती जीवन में है। जागीर का स्वामी था, और दास थे, ठीक है, और यदि आपने अपमान किया, तो आप चले गए और स्वामी के चेहरे पर थप्पड़ मार दिया, आप गंभीर संकट में हैं, ठीक है, क्योंकि आपने उसका अपमान किया, और ऐसा नहीं होना चाहिए, और यही एन सेलमैन ने कहा कि हमने भगवान के साथ किया। उन्होंने अपने जीवन की कल्पना का उपयोग किया।

मेरा मतलब है, क्या हमें बाइबल की कल्पना पर भरोसा करना चाहिए? बेशक, लेकिन जब तक आप इसे इस तरह से नामित करते हैं, तब तक अन्य कल्पना का उपयोग करना गलत नहीं है। वैसे भी, उसने यही किया, और उसने मुख्य परिणाम को परमेश्वर का अपमान माना। अब, यह प्रायश्चित के सिद्धांत में एक बड़ा सुधार है, ठीक है, क्योंकि मुख्य बात हम नहीं हैं, बल्कि फिर से परमेश्वर हैं, और मसीह का कार्य परमेश्वर को प्रभावित करने वाला है।

हाँ, इसका मनुष्यों पर असर पड़ता है, ठीक है, लेकिन उसके पास प्रायश्चित की ईश्वरीय भावना है जो अविश्वसनीय है क्योंकि अब तक, यह काफी हद तक शैतान की ओर निर्देशित थी, क्या तुम मेरे साथ हो? इसलिए, शैतान को फिरौती देने के बजाय, जिसे उसने तुरंत अस्वीकार कर दिया, परमेश्वर शैतान का न्याय करता है। वह उसे नहीं खरीदता। उसे शैतान का कोई ऋण नहीं है।

इसके बजाय, मसीह का कार्य स्वयं ईश्वर की ओर निर्देशित है, जो एक बड़ी उपलब्धि है, और इसके अलावा, क्यूर डेउस होमो, जिसमें आगे-पीछे प्रश्न-उत्तर पद्धति है, की आलोचना केवल विशुद्ध रूप से शैक्षिक होने के रूप में की गई थी, और एंसेलम के शरीर में आध्यात्मिक हड्डी नहीं है। अरे हाँ? बेनेडिक्टा वार्ड, एक रोमन कैथोलिक विद्वान, बेनेडिक्टा वार्ड, संत एंसेलम की प्रार्थनाएँ और ध्यान। उन्हें पढ़ें, आप रो पड़ेंगे।

ऐसा इसलिए है क्योंकि इस क्यूर डेउस होमो की आलोचना, लक्ष्य से चूक जाती है। यह एक विधा है, एक दोषपूर्ण विधा आलोचना। यह शैक्षणिक प्रश्न-उत्तर का समय है।

प्रश्नोत्तर, हम कहेंगे। प्रार्थना और ध्यान। हे प्रभु यीशु मसीह, जिन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया, मैं आपके सामने सिर झुकाता हूँ और आपकी पूजा करता हूँ।

हे भगवान, ऐसे ही, पृष्ठ दर पृष्ठ। एक आदमी ने प्रेम किया। उसने मसीह से प्रेम किया। उसने अपने प्रायश्चित से प्रेम किया।

वह अपने उद्धारकर्ता से प्यार करता था। तो, ठीक है, हम कभी-कभी मूर्खतापूर्ण गलतियाँ कर सकते हैं, और एंसेलम के साथ सब कुछ ठीक नहीं है, लेकिन वह एक बड़ा प्रभाव था और उसने ईसाई चर्च के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक लिखा था। मैं आपको दो जगहें बताऊंगा जहाँ सुधारकों ने उनके काम में सुधार किया।

लेकिन पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि एंसेलम का मुख्य कार्य, जैसा कि मैंने कहा, प्रायश्चित पर, यह था कि ईश्वर मनुष्य क्यों बना। क्यूर डेउस होमो। एंसेलम ने इरेनियस के पुनर्पूजाकरण दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया।

यह दुःखद था क्योंकि यह कई मायनों में सच है। मसीह दूसरे आदम हैं और नई सृष्टि के रचयिता हैं। लेकिन यह ठीक है।

उन्होंने ग्रेगरी ऑफ निस्सा और अन्य लोगों के शैतान से मुक्ति के दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया, और प्रायश्चित का वर्णन केवल ईश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति थी। एंसेलम एबेलार्ड, मुझे माफ़ करें, उस हद तक पहुँचते हैं, देखिए। मसीह के अवतार और मृत्यु का कारण बहुत गहरा है।

जेम्स डेनी ने प्रायश्चित पर एक अच्छी किताब लिखी, *द एटोनमेंट एंड द मॉडर्न माइंड*, जिसे एंसेलम का काम कहा जाता है। यह प्रायश्चित पर लिखी गई अब तक की सबसे सच्ची और महान किताब है। मुझे इसके बारे में नहीं पता, लेकिन अपने समय के ढाँचे में, इसने हमें बहुत आगे बढ़ाया, मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को मिलाकर, यह दिखाते हुए कि यीशु का ईश्वरत्व और

मानवता मोक्ष के लिए आवश्यक थे, क्रूस की ईश्वरीय दिशा पर जोर दिया, और भी बहुत कुछ। एंसेलम ईश्वर की कृपा पर जोर देने के साथ-साथ ईश्वर के न्याय पर भी समान जोर देने का प्रयास करता है।

भगवान अपने सम्मान के खिलाफ किए गए अपराध को बिना सजा के नहीं छोड़ सकते, उनके सम्मान को बिना किसी क्षतिपूर्ति के। देखिए, मध्ययुगीन स्थिति में ऐसा ही होता। आपको भगवान के अपमानित सम्मान की मरम्मत करनी थी, क्षतिपूर्ति करनी थी, या आप गंभीर संकट में थे।

लेकिन अपनी कृपा से, भगवान ने इसी क्षतिपूर्ति का प्रबंध किया। एन्सेलम का तर्क है कि पाप से हुए नुकसान को केवल भगवान ही ठीक कर सकते हैं। एन्सेलम लिखते हैं कि अगर भगवान के अलावा कोई और इंसान को छुड़ाने की कोशिश करता, तो उस स्थिति में इंसान को वह सम्मान वापस नहीं मिल पाता जो उसे तब मिलता अगर उसने पाप न किया होता।

लेकिन कम से कम दो कारण हैं कि क्यों मसीह ही हमें छुड़ा सकता है क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है। एन्सेलम प्रायश्चित्त को परमेश्वर की योजना के संदर्भ में रखता है, और परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। और क्योंकि मसीह परमेश्वर के साथ एक है, ठीक वैसे ही जैसे वह मानवजाति के साथ एक है, एन्सेलम उसे, इस पर ध्यान दें, परमेश्वर-मनुष्य कहता है।

वाह। यह बिल्कुल सही है। वह इस बात पर जोर देता है कि मसीह ने स्वतंत्र रूप से मृत्यु को सहन किया।

याद रखें, मैंने कहा, यशायाह 53, मसीह के प्रायश्चित्त की स्वैच्छिक प्रकृति। परमेश्वर ने, उद्धरण, मसीह को मरने के लिए मजबूर नहीं किया जब उसमें कोई पाप नहीं था, लेकिन मसीह ने स्वतंत्र रूप से, स्वयं स्वतंत्र रूप से मृत्यु को सहन किया। प्रायश्चित्त मसीह पर निर्भर करता है कि वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों हो, पाप रहित हो, और दूसरों के पापों के लिए स्वेच्छा से मर जाए।

एंसेलम कहते हैं कि पाप करना वैसा ही है जैसे ईश्वर को उसका हक न देना। फिर वह सामंती कानून से इस सिद्धांत को लेता है, उद्धरण, किसी दूसरे के सम्मान का उल्लंघन करने वाले के लिए उस सम्मान को बहाल करना पर्याप्त नहीं है जब तक कि वह किसी तरह की क्षतिपूर्ति न करे जो उस व्यक्ति को खुश करे जिसका अपमान किया गया था, चोट और अपमान की सीमा के अनुसार।

इसलिए, पापियों को भगवान को संतुष्टि देने की आवश्यकता थी। वास्तव में, एन्सेलम ने इसे एक दुविधा के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने लैटिन में कहा, आउट सैटिस्फैक्टियो, आउट पोएना, या तो संतुष्टि या सजा।

और ईश्वर ने कृपापूर्वक, मानवजाति को दंडित करने के बजाय, अपने बेटे द्वारा प्रदान की गई संतुष्टि को स्वीकार किया। एन्सेलम ने इस वाक्यांश का परिचय देते हुए कहा, यह उचित है। वह लिखते हैं कि यदि ईश्वर के लिए अन्यायपूर्ण तरीके से या बिना उचित आदेश के कुछ करना उचित नहीं है, तो यह उसकी स्वतंत्रता या दयालुता का हिस्सा नहीं है कि वह उस पापी को बिना दंड के क्षमा कर दे जो ईश्वर को वह नहीं चुकाता जो उसने उससे लिया था।

अक्सर, पारंपरिक या रूढ़िवादी ईसाइयों को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि, भगवान को पाप को दंडित करना चाहिए। जो लोग प्रायश्चित के लिए व्यक्तिपरक दृष्टिकोण का पालन करते हैं, जहां यह मूल रूप से हमें मुख्य रूप से प्रभावित करता है, वे कहते हैं, क्यों? एंसेलम के पास एक अच्छा जवाब है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान को, एक तार्किक रूप से, अपने स्वभाव, अपने वादे और दुनिया के अपने शासन के साथ सुसंगत रहना चाहिए।

'अवश्य' का अर्थ बाहरी बाध्यता नहीं है। हम सुधारकों के कानून पर जोर देने और मसीह द्वारा अपने लोगों को क्षमा करने के लिए कानून की सजा भुगतने की प्रतिक्रिया में देखेंगे, वे, कुछ सोसिनस, कहते हैं कि ईश्वर कानून को त्याग देता है। और गोटियस कहते हैं कि ईश्वर कानून को समायोजित करता है, वह कानून को कम करता है।

नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। अच्छा, देखिए, क्या आप कानून को एक बाहरी सिद्धांत नहीं बना रहे हैं जिसका पालन भगवान को करना चाहिए? नहीं, कानून भगवान के अपने चरित्र का एक रहस्योद्घाटन है। वह केवल अपने प्रति सच्चा है।

'जरूर' का मतलब बाहरी मजबूरी नहीं है। यह आंतरिक और तार्किक है, जैसे कि 'ईश्वर झूठ नहीं बोल सकता'। 'यह उचित है' वाक्यांश बाहरी मजबूरी के किसी भी विचार को बाहर करता है।

ईश्वर सर्वोच्च है। वह अपने वचन और चरित्र के प्रति भी वफादार रहता है। मैं एंसेलम के साथ इतना समय बिता रहा हूँ क्योंकि वह इसका हकदार है।

ईश्वर के अलावा कोई भी व्यक्ति संतुष्टि नहीं दे सकता। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति नहीं दे सकता। मनुष्य के अलावा किसी को भी इसे नहीं देना चाहिए।

यह बहुत सुंदर है। इसे बनाने के लिए ईश्वर-मानव की आवश्यकता है। केवल ईश्वर ही हमें बचा सकता है।

भगवान को हमें बचाना है। अवतार लेना जरूरी है। यह दिखावा नहीं है।

यह भगवान द्वारा अपनी उंगली क्लिक करने का कोई वैकल्पिक तरीका नहीं है। नहीं, भगवान को मनुष्य बनना पड़ा, अपने लिए नहीं, बल्कि हमें बचाने के लिए। इसे देखते हुए, हम इसे कहते हैं, मेरे पास सही शब्द नहीं है, दार्शनिक शब्दावली, इस तथ्य को देखते हुए कि भगवान ने बचाने की इच्छा की, पूर्ण परिणामी आवश्यकता या ऐसा कुछ, भगवान ने यह कहने की इच्छा की कि उसे बचाने की इच्छा नहीं थी, लेकिन बचाने के लिए अपनी इच्छा देना, तो यह एक आवश्यकता है।

ईश्वर पर मनुष्य बनने की कोई बाध्यता नहीं है, लेकिन अच्छे भगवान, त्रिदेव, एक पवित्र सभा में मानव जाति या कई मनुष्यों को बचाने का फैसला करते हैं। ऐसा ही होना था क्योंकि केवल ईश्वर ही प्रायश्चित कर सकता था और केवल वही कर सकता था, उसे करना चाहिए था, और केवल

वही उचित था; यही है, फिर से वही भाषा, जिसे मनुष्य द्वारा किया जा सकता है। मैं इसे इस तरह से कहता हूँ: केवल ईश्वर ही हमें बचा सकता है, और प्रायश्चित्त ईश्वर ने मानव शरीर में किया, न कि केवल शरीर में, बल्कि एक सच्ची, वास्तविक मानवता ने जो हमारी अपनी जाति में से एक है, हमारे पापों के लिए दंड चुकाया, और उसकी मानवता हमारे उद्धार के लिए उसके देवता के समान ही महत्वपूर्ण है।

यीशु मसीह ने मनुष्य के रूप में आदम की जाति में अपना स्थान ग्रहण किया, लेकिन एक कुंवारी से जन्म लिया। एन्सेलम ईश्वर और मनुष्य के व्यक्तित्व की एकता पर जोर देता है, एक ही व्यक्ति के रूप में। वह पाप रहित है और इसलिए उसे मरने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है, लेकिन वह मनुष्य के पाप के लिए संतुष्टि देने के लिए ईश्वर के सम्मान के लिए स्वेच्छा से ऐसा करता है।

उसकी मृत्यु, ईश्वर की मृत्यु, ईश्वर-मनुष्य, सभी पापों से भारी है। मसीह की मृत्यु से न केवल उन लोगों को लाभ हुआ जो उस समय जीवित थे, बल्कि अन्य लोगों को भी। यह बिल्कुल इब्रानियों 9:13 है। हे भगवान।

प्रायश्चित्त के कई तरीकों की तरह, थिसलटन ने समझदारी से कहा, यह नए नियम में अंतर्दृष्टि और व्याख्यात्मक समृद्धि जोड़ता है जब तक कि इसे अनन्य और व्यापक मॉडल के रूप में नहीं माना जाता है। यह ईसाई धर्मशास्त्र के इतिहास में इस विषय की सबसे महत्वपूर्ण व्याख्याओं में से एक है। आमीन, और आमीन।

बिल्कुल सही? नहीं। बड़ी उपलब्धि? हाँ। मैं फिर से यही कहूँगा।

पश्चिम में शैतान को फिरौती देना एक प्रमुख विचार था। नहीं, एन्सेलम ने कहा, सबसे गहराई से, मसीह का कार्य स्वयं ईश्वर की ओर निर्देशित है। यह मेरा अपना कठिन-से-प्राप्त निष्कर्ष है।

और उन्होंने इसे वर्ष 1100 में यहाँ प्राप्त किया। अचंभित करने वाला, अद्भुत। लेकिन उनके काम में सुधार किया जा सकता था, और सुधारकों ने ऐसा किया।

उन्होंने सही कहा कि यह परमेश्वर के अपमानित सम्मान की मरम्मत या संतुष्टि नहीं है। यह उसका न्याय है जो संतुष्ट है। पाठ, रोमियों 3:25-26। इसके अलावा, यह कोई दुविधा नहीं है, या तो संतुष्टि या सजा, लेकिन यह क्रूस पर पुत्र की सजा के माध्यम से परमेश्वर के न्याय की संतुष्टि है।

न तो संतुष्टि और न ही सजा, बल्कि ईश्वर के पुत्र की सजा के माध्यम से दिव्य संतुष्टि। दुख की बात है कि एबेलार्ड ने संत एंसलम के बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण अपनाया, जिनके काम की उन्होंने आलोचना की। ओह, एबेलार्ड एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

एंसेलम एक होशियार व्यक्ति था, लेकिन उस समय एबेलार्ड एक व्याख्याता था। शुक्र है कि आज ऐसा नहीं है, लेकिन उस दिन एक व्याख्याता अपने आस-पास छात्रों को इकट्ठा करता था, जब तक कि कोई बेहतर व्याख्याता नहीं आ जाता। और एबेलार्ड ने विलियम ऑफ चैपॉक्स को व्याख्यान देते हुए देखा और कहा, मैं उससे बेहतर कर सकता हूँ। और उसने ऐसा किया और अपने छात्रों को ले गया।

इसके अलावा, वह एक आविष्कारशील शिक्षक थे, लेकिन वह हमेशा किनारे पर रहते थे। और कभी-कभी किनारे से भी आगे निकल जाते थे। और चलिए इसे इस तरह से कहते हैं।

आप सेंट बर्नार्ड के क्रोध को झेलकर बच नहीं पाए। बर्नार्ड ऑफ क्लेरवॉक्स। और वह बच निकला।

अपने जीवन में, उसने हेलोइस के साथ कुछ गलत काम किया और वह बदनाम हो गया। चाचा की भतीजी को ट्यूशन पढ़ाना और वैसे भी, उस आदमी ने उसे बधिया करवा दिया। ओह, यह एक भयानक कहानी है।

वैसे भी, अपने शिक्षण में, छात्रों को इस बारे में सोचने और विचार करने के लिए उकसाने के लिए, उन्हें यह सोचने के लिए उकसाया जाता था कि पिताओं के उद्धरणों को बाइबल नहीं माना जाता था, बल्कि उन्हें छह महत्वपूर्ण अधिकारियों के रूप में माना जाता था, है न? उनके पास एक प्रसिद्ध शब्द है जिसे सिक एस्ट एट नॉन कहते हैं। हाँ और नहीं। उन्होंने दो अलग-अलग कॉलम में पिताओं के उद्धरण एक दूसरे के खिलाफ रखे।

और फिर उसने संत ऑगस्टीन के खिलाफ संत ऑगस्टीन के उद्धरणों को रखने की पूरी हिम्मत की। आह, बर्नार्ड उस बिंदु पर अपना आपा खो बैठा। ओह, बेचारा एबेलार्ड।

उदाहरणवादी या नैतिक प्रभाव सिद्धांत का मुख्य प्रतिनिधि माना जाता है। उनके पास इससे कहीं अधिक है, लेकिन दुख की बात है कि मेरा मानना है कि यह सच है।

मुझे डॉक्टर की पढ़ाई के लिए एंसेलम और एबेलार्ड की तुलना करते हुए एक पेपर लिखना था, या मैंने ऐसा करने का फैसला किया। और उनकी कई अन्य छवियाँ हैं, लेकिन मैं आपको बताऊँगा कि मैं उन्हें पिता क्यों कहता हूँ। न केवल रूढ़िवादी लोग उन्हें ऐसा लेबल देते हैं, बल्कि प्रायश्चित के नैतिक प्रभाव सिद्धांत के समर्थक उन्हें अपने परदादा के रूप में उद्धृत करते हैं।

ओह बॉय। बाद में कुछ संशोधनों के साथ उनका अनुसरण फॉस्टस सोसिनस, एक भयानक विधर्मी, फ्रेडरिक श्लेयरमेकर, आधुनिक धर्मशास्त्र के जनक, और अल्ब्रेक्ट रिटशेल, एक विनाशकारी आधुनिक धर्मशास्त्री द्वारा किया गया। मुझे फ्रेंच बोलने के लिए खेद है, लेकिन हे भगवान।

दूसरी ओर, एबेलार्ड एक परिष्कृत दार्शनिक और धर्मशास्त्री थे जिन्होंने त्रिएकत्व पर लिखा, बाइबिल के अंशों की व्याख्या और व्याख्या की, तथा नैतिकता के साथ-साथ प्रायश्चित की भी व्याख्या की। इसके अलावा, प्रायश्चित पर उनका काम मुख्य रूप से रोमियों पर उनकी टिप्पणी में छोटी टिप्पणियों तक ही सीमित था। यहाँ वह खुद को फांसी पर लटका देता है, मेरे अनुमान में, विशेष रूप से रोमियों 3:19 से 26 में।

और यह अकल्पनीय है कि यह छोटा सा अंश विषय के बारे में उनके व्यापक दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। मैं सहमत हूँ। मैंने उनके लेखन में पाया कि उनके अधिकांश कामों का कभी अनुवाद नहीं किया गया। यह एक बहुत बड़ी समस्या है।

रोमनों की टिप्पणी, कम से कम इसके कुछ भाग, रहे हैं। तो, उसके पास अन्य उद्देश्य हैं। उसने बलिदान का उल्लेख किया।

वह छुटकारे का जिक्र करता है। तो फिर, क्या उन्हें रोमियों 3 में नहीं दिखाया जाना चाहिए, जिसमें छुटकारे और प्रायश्चित या कम से कम प्रायश्चित दोनों का जिक्र किया गया है? दुख की बात है कि रोमियों 3:19 और 26 की अपनी व्याख्या में, वह निश्चित रूप से कभी-कभी यह कहने में सही है कि न्यायसंगत होने का मतलब है कि कोई पिछला गुण नहीं होना। बढ़िया।

परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया। हाँ। अनुग्रह परमेश्वर का एक निःशुल्क और आध्यात्मिक उपहार है।

आमीन। और उसके खून का मतलब है उसकी मौत। अब तक, चार में से चार।

लेकिन उनकी पाँचवीं परिभाषा ज़्यादा संदिग्ध है। यानी, यह दिखाती है कि परमेश्वर ने वर्तमान समय में अपना न्याय प्रदर्शित किया है। इसका मतलब है उसका प्रेम।

नहीं, ऐसा नहीं है। परमेश्वर ने अपना प्रेम न्यायी होने के लिए प्रदर्शित किया और यीशु पर विश्वास करने वालों को न्यायी ठहराने के लिए प्रदर्शित किया।

मुझे ऐसा नहीं लगता। यह उनके प्रेम को दर्शाता है, लेकिन वह अपने प्रेम को सूर्य को एक प्रायश्चित के रूप में स्थापित करके दिखाते हैं। वह हेलास्मोस, या हेलास्टेरियन, क्षमा करें, प्रायश्चित को प्रेम में बदल रहे हैं।

यह परमेश्वर के प्रेम से निकलता है, लेकिन यह मात्र प्रेम नहीं है। इसी तरह, उनका यह सवाल उठाना सही है कि हमें अपने उद्धार के लिए चुकाए गए रक्त की कीमत को किस हद तक दबाना चाहिए। लेकिन एक निर्दोष व्यक्ति के रक्त की मांग को क्रूर और दुष्ट के रूप में वर्णित करना, निर्दोष व्यक्ति यीशु है, दुखद रूप से सवालों के घेरे में है।

फिर से, एबेलार्ड का यह कहना सही है कि उसने हमें प्रेम के द्वारा अपने साथ और भी अधिक पूरी तरह से बांध लिया है। आमीन। उसने हमारे साथ एक वाचा बाँधी है जिसके परिणामस्वरूप हमारे हृदय ईश्वरीय अनुग्रह के ऐसे उपहार से पुनः प्रज्वलित हो जाएँ।

लेकिन यह सवाल तब उठता है जब वह यह संकेत देता है कि ईश्वर के पुत्र के प्रायश्चित के बारे में हमें बस इतना ही कहना है। इसीलिए लियोन मॉरिस और अन्य लोग इस प्रसिद्ध कहावत को उद्धृत करते हैं: प्रायश्चित के सिद्धांत जो पुष्टि करते हैं उसमें सही हैं लेकिन जो अस्वीकार करते हैं उसमें गलत हैं। एबेलार्ड के लिए, मुख्य बात ईश्वर के प्रति हमारा भय और अविश्वास था।

कूस का मुख्य कार्य नैतिक प्रभाव के रूप में कार्य करना है, परमेश्वर के प्रेम का प्रदर्शन करना ताकि परमेश्वर के प्रति हमारा भय और अविश्वास समाप्त हो जाए। क्या हमारे मन में परमेश्वर के प्रति भय और अविश्वास है? ज़रूर। क्या यही प्रायश्चित की मुख्य बात है? इसे बदलना? नहीं।

क्या इससे कुछ बदल जाता है? हाँ। आह, मुख्य बात यह है कि यीशु ने अपने लहू से पापों को दूर करने के लिए अपनी जान दी, और वह परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मरा ताकि हमें क्षमा मिल सके। दुखद कहानी।

एन्सेलम को प्रायश्चित के वस्तुनिष्ठ सिद्धांतों के पिता के रूप में जाना जाता है, सही मायने में, बिल्कुल सही, नहीं, लेकिन सही मायने में। इस क्षेत्र में बड़ी प्रगति करने के बाद, एबेलार्ड को आधुनिक, नैतिक प्रभाव या अनुकरणीय सिद्धांत के पिता के रूप में जाना जाता है। यीशु केवल एक उदाहरण है, या मुख्य रूप से एक उदाहरण है।

क्या यीशु एक उदाहरण हैं? हाँ। मैं नए नियम में 10 ऐसे स्थान गिनता हूँ जहाँ वे अपनी मृत्यु में ही ईसाइयों के लिए एक उदाहरण हैं। क्या वे कभी ईसाई बनने का उदाहरण हैं? नहीं।

हम इसे सुधारकों के प्रति एक अलग प्रतिक्रिया में देखेंगे। नहीं। यीशु, हर बार, सभी 10 बार, यीशु का उदाहरण इस संदर्भ में है, कि आप कैसे ईसाई बनते हैं, लेकिन आप ईसाई जीवन कैसे जीते हैं।

हम उनके उदाहरण का अनुसरण करते हैं। क्या प्रायश्चित का मुख्य उद्देश्य यही है? नहीं। यह बिल्कुल भी प्रायश्चित नहीं है।

यह पवित्रीकरण है। यह उन लोगों के लिए ईसाई जीवन को बढ़ावा देता है जिन्होंने विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उसके प्रायश्चित में भाग लिया है। सुधार, लूथर, कैल्विन, और फिर विचलित सोसिनस, आप देखेंगे, उसने मूल पाप और मसीह के ईश्वरत्व को नकार दिया।

उसके बाद प्रायश्चित के बारे में आपका क्या नज़रिया होगा? बहुत ही दोषपूर्ण। गोटियस उतना बुरा नहीं है, लेकिन प्रायश्चित का सरकारी सिद्धांत अच्छा नहीं है। मेरे पास आपको इसके बारे में बताने के लिए एक मज़ेदार कहानी है, लेकिन अभी नहीं।

लूथर, 1483 से 1546 तक। उनके पास क्रॉस से संबंधित बहुत सारी सामग्री है। लेकिन एक सुसंगत व्याख्या प्रस्तुत करना मुश्किल है।

कैल्विन संस्थानों में व्यवस्था स्थापित करने वाले व्यक्ति थे। लूथर एक महान उपदेशक थे। कैल्विन भी हमेशा उपदेशक थे, लेकिन लूथर कैल्विन जितने व्यवस्थित नहीं थे।

और यह एक ताकत और कमजोरी दोनों है। मैं उन दोनों से प्यार करता हूँ। लूथर में, मसीह का कार्य हमेशा विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा औचित्य के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है।

गलातियों 3:13 में लिखा है, मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया। उसने लिखा, मसीह ने हमें व्यवस्था के अभिशाप से मुक्त किया है। अनुग्रह प्रेम की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि इसका कारण है।

परमेश्वर का प्रेम अपने प्रेम की वस्तु बनाता है। परमेश्वर के अनुग्रह ने मसीह के प्रायश्चित्त कार्य की शुरुआत की। यह बिल्कुल सही है।

केल्विन भी यही बात सिखाते हैं। कई बार, लूथर पर निर्भरता में, सुधार के समय अपने समकालीनों को श्रेय देना प्रथागत नहीं था। लूथर के बड़े धर्मशिक्षा में, उन्होंने लिखा कि उद्धारक के रूप में, वह हमें शैतान से परमेश्वर के पास, मृत्यु से जीवन की ओर, और पाप से धार्मिकता की ओर ले आए।

उसने दुख उठाया, मरा और दफनाया गया ताकि वह मेरे लिए संतुष्टि दे सके और जो मैं चुकाता हूँ उसे चुका सके। व्यक्तिगत आयाम पर ध्यान दें। चांदी और सोने से नहीं, 1 पतरस 1.18.19, बल्कि अपने खुद के कीमती खून से, ताकि वह मेरा प्रभु बन सके।

गुस्ताव औलेन ने पुस्तक लिखी, क्राइस्टस विक्टर, लूथर से यह आग्रह करना सही था कि वह प्रायश्चित्त के अपने धर्मशास्त्र में जीत और हार, यीशु और उसके लोगों की जीत और शैतान और उसके राक्षसों की हार पर जोर दे, लेकिन लूथर के बलिदान, प्रायश्चित्त और प्रतिस्थापन पर जोर को कम आंकना गलत था। वास्तव में, मार्टिन लूथर के धर्मशास्त्र पुस्तक में, पॉल अल्थौस, एक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान, पॉल अल्थौस ने सही ढंग से कहा है कि लूथर के पास मसीह के कार्य के दो प्रमुख विचार हैं, और यह तय करना कठिन है कि कौन सा प्रमुख है, अधिक प्रमुख, कौन सा प्रबल है। क्राइस्टस विक्टर, दंडात्मक प्रतिस्थापन।

यह बिल्कुल सही है। उन्होंने उन्हें बाइबल की तरह ही आपस में जोड़ दिया है। बाइबल अपने विषयों को जोड़ती है, और हम उन्हें जांचने के लिए बाहर निकाल सकते हैं, लेकिन फिर हमें उन्हें फिर से एक साथ रखना चाहिए।

मैं अपने स्वयं के अनुशासन, व्यवस्थित धर्मशास्त्र की आलोचना के एक हिस्से का अनुमान लगा रहा था, जिसे अब कल तक इंतजार करना होगा, लेकिन यह सच है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र एक महान गुण है क्योंकि यह चीजों को अलग करता है और उन्हें हमारे सामने रखता है, और उन्हें देखने और जांचने में हमारी मदद करता है। तो, मसीह के व्यक्तित्व और मसीह के कार्य के अध्ययन के सभी विवरणों को एक साथ कौन समझ सकता है? इसलिए, हम मसीह के व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं, और हम उनके पूर्व-अस्तित्व, और उनके अवतार, और उनके देवता, और उनकी मानवता, और उनकी एकरूपता, और उनकी दो अवस्थाओं का अध्ययन करते हैं, और हम मसीह के कार्य, उनकी घटनाओं, उन घटनाओं की व्याख्या करने वाले चित्रों, उनके तीन पदों, और इसी तरह का अध्ययन करते हैं, लेकिन फिर हम उन चीजों को फिर से एक साथ जोड़ देते हैं, क्योंकि वही अंश जो मसीह के व्यक्तित्व को सिखाते हैं, मसीह के कार्य को भी सिखाते हैं।

इसलिए, सिस्टमैटिक्स मददगार हो सकता है, लेकिन यह खतरनाक है। यह अपने आप में एक अंत नहीं है। इसलिए, टोनी थिसलटन ने अपनी महाकाव्य-निर्माण पुस्तक, *क्राइस्टस विक्टर में गुस्ताव* औलेन की आलोचना करते हुए सही कहा है कि लूथर ने केवल क्राइस्टस विक्टर को पढ़ाया था।

नहीं। उन्होंने कानूनी दंडात्मक प्रतिस्थापन के बारे में भी समान रूप से सिखाया। लूथर के लेखन, गुड फ्राइडे पर उपदेश, लूका 24:36 से 47 तक सुनें।

गुड फ्राइडे धर्मोपदेश, लूका 24:36 से 47. उद्धरण: यदि ईश्वर के क्रोध को दूर करना है, और मुझे अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करनी है, तो किसी को इसके योग्य होना चाहिए, क्योंकि ईश्वर दंड और क्रोध को तब तक माफ नहीं कर सकता जब तक कि भुगतान और बलिदान स्वयं ईश्वर के पुत्र द्वारा न किया जाए। यह केवल क्राइस्टस विक्टर नहीं है, मेरे दोस्तों।

वह क्राइस्टस विक्टर है, और कानूनी धर्मशास्त्र, जहाँ मसीह हमारे पापों के लिए दंड का भुगतान करता है। जॉन कैल्विन, 1509 से 1564 तक, लूथर और कैल्विन के बीच मुख्य अंतर पदार्थ का नहीं, बल्कि सुसंगति और व्यवस्था का था। कैल्विन के संस्थानों की पुस्तक के अध्याय 12 से 17 में मध्यस्थ, भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा के रूप में मसीह के कार्य की व्याख्या की गई है।

ये मेरे डॉक्टरेट शोध प्रबंध के अध्याय हैं। पुस्तक दो, 12 से 16, या इस मामले में, वह 17 को शामिल कर रहा है। मसीह एक मध्यस्थ है।

यह व्यक्ति और कार्य को कहने का बाइबिल और कैल्विनियन तरीका है। मसीह मध्यस्थ है, और वह पैगंबर, पुजारी और राजा है। और कैल्विन मानव स्वभाव में यीशु की भागीदारी पर जोर देता है।

कैल्विन ने स्पष्ट रूप से अवतार की आवश्यकता पर जोर दिया और दंडात्मक प्रतिस्थापन की स्पष्ट शिक्षा दी। उन्होंने लिखा, उद्धरण, कि एक व्यक्ति जो अपनी अवज्ञा के कारण खो गया है, उसे पाप के लिए दंड का भुगतान करना चाहिए। तदनुसार, हमारे प्रभु सच्चे मनुष्य के रूप में सामने आए और पिता की आज्ञा मानने में आदम का स्थान लेने के लिए, परमेश्वर के धर्मो न्याय के लिए संतुष्टि की कीमत के रूप में हमारे शरीर को प्रस्तुत करने के लिए, और उसी शरीर में उस दंड का भुगतान करने के लिए जिसके हम हकदार थे।

उसी खंड में, कैल्विन ने तर्क दिया कि, उद्धरण, चूंकि न तो ईश्वर अकेले मृत्यु को महसूस कर सकता है और न ही मनुष्य अकेले उस पर विजय प्राप्त कर सकता है, इसलिए उसने पाप के प्रायश्चित के लिए मानव प्रकृति को ईश्वरीय प्रकृति के साथ जोड़ दिया। संत एंसलम की प्रतिध्वनियाँ, आप शर्त लगा सकते हैं, आप शर्त लगा सकते हैं, और वास्तव में प्रेरित पॉल की। कैल्विन ने अलग-अलग खंडों में पैगंबर, पुजारी और राजा के पदों पर चर्चा की, लेकिन हमेशा मसीह के प्रायश्चित के संबंध में।

पुजारी के रूप में, यीशु मसीह परमेश्वर तक पहुँच को खोलता है, जो कि पॉलिन का विषय है, क्योंकि परमेश्वर का धार्मिक अभिशाप हमें उसके पास आने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन

मसीह अपने कार्य को पूरा करने के लिए बलिदान के साथ आगे आए हैं। इस बलिदान के द्वारा, उन्होंने हमारे अपराध को मिटा दिया और, उद्धरण, हमारे पापों के लिए संतुष्टि प्रदान की।

उद्धरण, जिस अपराध ने हमें दंड के लिए दंडित करने के लिए उत्तरदायी बनाया, उसे परमेश्वर के पुत्र के सिर पर स्थानांतरित कर दिया गया है। हमें, सबसे बढ़कर, उसके प्रतिस्थापन को याद रखना चाहिए, ताकि हम जीवन भर कांपते और चिंतित न रहें। दंडात्मक प्रतिस्थापन की व्याख्या करने के लिए कैल्विन के कारणों में ईश्वर के साथ मेल-मिलाप का अद्भुत आश्वासन निहित है, जो यह सिद्धांत लाता है।

उन्होंने कहा, उन्होंने लिखा, उद्धरण, यदि उनके रक्तपात का प्रभाव यह नहीं है, कि, क्षमा करें, हमारे पापों को हम पर आरोपित नहीं किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि ईश्वर का न्याय उस कीमत से संतुष्ट था। कैल्विन के लिए ईश्वर की दया और उनके न्याय के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। उद्धरण, मसीह ने दंड को अपने ऊपर ले लिया और अपने रक्त से उन लोगों के पापों का प्रायश्चित्त किया, जिन्होंने मानवजाति को ईश्वर के लिए घृणित बना दिया था, और ईश्वर पिता को उचित रूप से प्रसन्न किया।

इस आधार पर, मसीह ने ईश्वर और मनुष्य के बीच शांति की स्थापना की। पॉल का अनुसरण करते हुए कैल्विन ने जोर दिया कि ईश्वर की कृपा और प्रेम ने छुटकारे और प्रायश्चित्त की प्रक्रिया शुरू की। हम, प्रभु की इच्छा से, मसीह की बाइबिल की घटनाओं और बाइबिल के चित्रों का अध्ययन करने के लिए एक प्रस्तावना के रूप में प्रायश्चित्त के सिद्धांत के इतिहास का अध्ययन जारी रखेंगे, हमारे अगले घंटे में विधर्मियों, सोसिनस, यह एकमात्र शब्द है जिसका मैं उपयोग कर सकता हूँ, और डच धर्मशास्त्री जो बेहतर है लेकिन अभी भी पूरी तरह से कोषेर नहीं है, हम कहेंगे, ग्रीटियस।

और फिर, हम आधुनिक काल की ओर बढ़ेंगे। आपके अच्छे ध्यान के लिए धन्यवाद और भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 4, परिचय, भाग 4, प्रायश्चित्त के सिद्धांत का इतिहास है।